से केवल पारलौकिक विषयों को ही समझना उसके ..
को घटाना है। ईश्वर, आत्मा, मनुष्य, समाज, देश, कु
आदि के प्रति हमारा क्या धर्म है, अतएव हमारे दे
समाज या धर्म में क्या २ दोष हैं, हम इनको कैसे दूर क
सकते हैं, इत्यादि विषयों का ज्ञान प्राप्त करा के
अनुसार कर्म और व्यवहार कराना धार्मिक शिक्षा
मुख्य प्रयोजन समझना चाहिए। लेखक ने यथाशक्ति यह
कोशिश की है कि किसी सम्प्रदाय के किसी मुख्य धार्मिक
सिद्धान्त के विरुद्ध इस पुस्तक में कोई बात न आवे,
परन्तु जिन कुरीतियों, कुविचारों और कुसंस्कारों को
के लगभग सभी विद्वान और सुधारक देश, जाति
सद्धर्म के लिए सर्वथा अहितकर मानते हैं, और
उन्नति, सुमार्ग, सदाचार और उदार धर्म के सर्वथा
कूल हैं उनका दिग्दर्शन-मात्र बड़े ही नम्र शब्दों में क
कर दिया गयाहै। यह ठीक है कि धार्मिक शिक्षा की सफ
शिक्षक के व्यक्तित्व पर बहुत कुछ निर्भर है परन्तु अनुभ
से मालूम होता है कि शिक्षकों को शिक्षा देते समय
से बड़ी सहायता मिलती है।

इस पुस्तक का प्रत्येक विषय कठिन और सूक्ष्म हो
पर भी, सरल, सुबोध और संक्षिप्त रीति से प्रश्नोत्तर
ढँग से समझाया गया है, ताकि शिक्षक और शिक्षार्थी

हुए आसानी से समझकर उसपर विचार और बातचीत कर सकें । यह पुस्तक बालक और बालिकाओं दोनों को दी जा सकती है और प्रत्येक सम्प्रदाय और समुदाय के लोग बिना किसी संकोच के अपने साम्प्रदायिक या जातीय विद्यालयों में इसे प्रचलित कर सकते हैं। लेखक को इस पुस्तक के प्रश्नों के बनाने में हिन्दूइज़्म, धर्मशिक्षा, सनातन-धर्म शिक्षा आदि पुस्तकों से सहायता मिली है जिसके लिए उनके लेखक महानुभावों का अनुग्रहीत है।

काशीनाथ.

कानपुर ...<br>
नवमी सं. १९७२

# विषयसूची

# बाल धर्म शिक्षक

## १—धर्म

प्रश्न—धर्म क्या है ?

उत्तर—धर्म शब्द उन गुणों, कर्तव्यों और विचारों का वाचक है जो यथार्थज्ञान और शुद्ध आचार पर निर्भर है।

प्रश्न—धर्म से क्या होता है ?

उत्तर—धर्म से मनुष्य के मन, वाणी और कर्म की शुद्धि होती है। धर्म मनुष्यों में प्रेम, न्याय, सत्य, पवित्रता आदि को फैलाता है। उस से कर्तव्याकर्तव्य का विवेक और आत्मा और ईश्वर इत्यादि सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञान होता है।

प्रश्न—व्यवहारिक धर्म क्या है ?

उत्तर—व्यवहारिक धर्म वह है जिस का आचरण स्वार्थत्यागी, जितेन्द्री, विचारशील विद्वानों

और महात्मागणों ने अपने जीवन में किया हो।

प्रश्न—धार्मिक सिद्धान्त कितने प्रकार के माने गये हैं? हिन्दू शास्त्र के अनुसार उस का वर्णन करो।

उत्तर—प्राचीन ऋषियों ने दो प्रकार के सिद्धान्त स्थिर किये हैं। एक लोक सम्बन्धी, दूसरे पर-लोक सम्बन्धी।

प्रश्न—लोक और परलोक में क्या भेद है?

उत्तर—लोक के अन्दर संसार और उस के सब कार्य्य और सम्बन्ध आ जाते हैं। लौकिक ज्ञान प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से प्राप्त होता है और इसका सम्बन्ध विशेष कर जीवनकाल तक रहता है। परलोक अदृष्ट है। उसका ज्ञान धर्म-ग्रन्थों, योगाभ्यास और अनुमान द्वारा होता है। भूगोल, इतिहास, गणित भाषा आदि का ज्ञान लौकिक ज्ञान है। ईश्वर, जीव आदि का ज्ञान पारलौकिक ज्ञान है।

## २—परमेश्वर

प्रश्न—इस सारे संसार का बनाने वाला कौन है?

उत्तर—इस संसार का बनाने वाला परमेश्वर है। जड़ और चेतन जगत में उसी की शक्ति काम कर रही है।

प्रश्न—उस का क्या स्वरूप है ?

उत्तर—वह सत, निराकार, सर्व्वशक्तिमान, पवित्र, न्यायकारी, अजन्मा, अद्वितीय, सर्व्वव्यापक और अविनाशी है।

प्रश्न—क्या हम उसे जान सकते हैं ?

उत्तर—हम अपनी किसी इन्द्री से उसे नहीं जान सकते और न केवल बुद्धि से ही उसे जान सकते हैं। उसे तो निर्मल वैराग्यवान जन ही शुद्धात्मा से जान सकते हैं।

प्रश्न—ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव के जानने के क्या साधन हैं ?

उत्तर—ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव के जानने के मुख्य साधन ये हैं:- "ज्ञानियों और भक्तों का सत्सङ्ग, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, सृष्टि और उस के पदार्थों का निरीक्षण, चित्त की एकाग्रता द्वारा ध्यान और विचार, तर्क और विज्ञान।

प्रश्न—ईश्वर से मिलने का क्या रास्ता है ?

उत्तर—परोपकारी कामों का करना, सदा सब से प्रीति और न्याय से वर्तना, सच और झूठ की खोज करते रहना, ईश्वर प्राप्ति

की दृढ़ इच्छा होना, वैराग्य और विवेक द्वारा विषय वासनाओं को दबाना इत्यादि मुख्य मुख्य साधन हैं।

प्रश्न—परमेश्वर से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—वह हमारा माता, पिता, बन्धु, मित्र, स्वामी, राजा, सखा, पालक और रक्षक है। हम जिस भाव से उस की भक्ति करेंगे वह उसी भाव से हमें स्वीकार करेगा।

प्रश्न—परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का क्या लक्षण है?

उत्तर—परमेश्वर के पवित्र गुणों और नामों का स्मरण और कीर्तन करना परमेश्वर की स्तुति है। पाप से बचने, आत्मा को शुद्ध रखने, ज्ञान प्राप्त करने और अपनी निर्बलताओं को दूर करने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगना ही परमेश्वर से प्रार्थना करना है। ध्यान, विचार, सत्सङ्ग और योगाभ्यास द्वारा परमात्मा की पवित्रता, सत्यता, न्यायशीलता आदि गुणों को प्राप्त कर के उन्हें अपने अन्दर साक्षात करना परमेश्वर की उपासना है।

प्रश्न—वर्तमान समय में स्तुति और प्रार्थना की क्या दशा है ?

उत्तर—वर्तमान समय में अनेक प्रकार की स्तुति और प्रार्थनाएं चली हैं जिन से मनुष्यों का बहुत कम कल्याण होता है। सच्ची स्तुति और प्रार्थना की पहिचान यह है कि उस का करने वाला नीचता, स्वार्थ और पाप से सदा दूर रहे।

प्रश्न—स्तुति और प्रार्थना कब और कैसे करना चाहिए ?

उत्तर—मनुष्यों को चाहिए कि प्रातःकाल और सायंकाल शान्तचित्त होकर एकान्त स्थान में स्तुति और प्रार्थना करें। अपने कर्मों और विचारों की परीक्षा करें। विना इस के अधिक लाभ नहीं होता।

प्रश्न—किस की प्रार्थना सफल समझनी चहिए ?

उत्तर—प्रार्थना करने से जिस मनुष्य के हृदय में नम्रता, क्षमा, जितेन्द्रियता, न्याय, दया, उदारता और पवित्रता का सञ्चार हो उसी की प्रार्थना सफल समझनी चाहिए।

प्रश्न—ईश्वर प्रार्थना किस प्रकार की होनी चाहिए ?

उत्तर—साधारणतः ईश्वर प्रार्थना निम्न प्रकार की होना चाहिए।

ईश्वर प्रार्थना :—

हे परमपिता परमेश्वर, हे करुणा निधान नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव परमात्मन्, आपको बारम्बार प्रणाम है। आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि मेरा शरीर निरोग और बलवान हो, मेरी इन्द्रियां निर्दोष और उद्यम शील हों। मेरा मन पवित्र और वाणी सत्य और मधुर भाषिणी हो। मेरे पांव कभी अयोग्य स्थान में न जाएं। मैं अपने हाथों से सदैव दूसरों की सेवा करूँ और मेरा जीवन परोपकारार्थ हो। हे दयामय! मेरा कोई कर्म्म किसी को कष्ट दायक कभी न हो। मैं सदा विद्या प्राप्त करने में तत्पर रहूँ और अपने माता, पिता, भाई, बहिन आदि कुटुम्बियों के लिए सुख-कारी होऊँ। मेरा कोई विचार सत्य और न्याय के विरुद्ध न हो। मैं अपनी सहेलियों ( या सखाओं ) और अध्यापिकाओं ( या अध्यापकों ) से प्रेम पूर्वक वरतूँ। हे नाथ! मुझे ऐसी बुद्धि दीजिए कि मैं विद्यावती ( या विद्वान ) होकर अपने देश और समाज और प्राणीमात्र की सेवा कर सकूँ, और अपनी मातृ-भूमि

भारत माता और संसार के रोग, दोष, अविद्या रूपी क्लेशों और दुःखों के दूर करने में सफल होऊँ।

## ३--मनुष्य

प्रश्न—मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर—एक विशेष शरीर और शकल वाले, विचार कर सकने वाले और अच्छे बुरे के समझने वाले जीव का नाम मनुष्य है।

प्रश्न—मनुष्य और पशु में क्या भेद है?

उत्तर—मनुष्य में तर्क, कर्तव्याकर्तव्यविवेक, दूरदर्शिता आदि गुणों की विशेषता है।

प्रश्न—मनुष्य के मुख्य २ भागों के नाम बताओ।

उत्तर—देह, इन्द्रियां, प्राण और आत्मा।

प्रश्न—देह क्या है?

उत्तर—यह जो कई प्रकार की धातुओं और तत्वों से बनकर चर्म, मांस, हड्डी, रक्त, मज्जा रूप में तुम्हारे सामने शरीर है इसी को देह कहते हैं।

प्रश्न—इन्द्रियां कितने प्रकार की हैं?

उत्तर—दो प्रकार की-ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां।

प्रश्न—ज्ञानेन्द्रियों के नाम और काम बताओ।

उत्तर—नेत्रों का काम देखना, नाक का काम सूंघना, कानों का सुनना, ज़बान का स्वाद लेना, त्वचा का छूना अर्थात् शीत, उष्ण, चिकना, खुरखुरा आदि मालूम करना है।

प्रश्न—कर्मेन्द्रियों के नाम और काम बताओ।

उत्तर—वाणी का काम बोलना, हाथों का काम पकड़ना, लेना, देना और पाओं का काम आना, जाना आदि है ?

प्रश्न—प्राण क्या पदार्थ है ?

उत्तर—हमारी देह में बहुत सी सूक्ष्म शक्तियां भिन्न भिन्न रूप में काम कर रही हैं। इन सब समुदाय का नाम प्राण है। प्राणों के बिगड़ने से रोगों की उत्पत्ति होती है और प्राणों के नाश से देह का नाश होता है।

प्रश्न—आत्मा किसे कहते है ?

उत्तर—जिस के लिए हम सब 'मैं' का प्रयोग करते हैं, जो अपने होने को आप जानता है, जिस में सोचने, निश्चय करने, याद रखने और अच्छे बुरे में भेद करने की शक्ति है उसी को आत्मा कहते हैं।

प्रश्न—स्वस्थ मनुष्य की क्या पहचान है?

उत्तर—जिस मनुष्य का शरीर पुष्ट, इन्द्रियां निर्दोष शरीर की धातुएं और पाचन शक्ति ठीक है वह मनुष्य स्वस्थ है।

प्रश्न—तुम अपने को पवित्र और उदार कैसे कर सकते हो?

उत्तर—सुखी पुरुषों को देख कर सुखी होना, दुखियों पर दया करना, पापियों को देख कर पापों से डरना, बुरे भावों को मन में कभी न आने देना, सावधानी से सच झूठ का निर्णय करना, दान-शील होना, अच्छे कामों के करने में कभी किसी से न डरना, नम्रता और क्षमा द्वारा अभिमान और क्रोध को दबाना इत्यादि के अभ्यास से आत्मा पवित्र और उदार हो सकता है।

प्रश्न—मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिये?

उत्तर—साधारणतः प्रत्येक मनुष्य को अपने शरीर और कुटुम्ब का पालन पोषण करते हुए विद्या और धर्म की उन्नति में तत्पर रह कर स्वदेश और मनुष्य जाति के कल्याण का प्रयत्न करना चाहिये।

## ४—मनुष्य-जाति

प्रश्न—मनुष्य जाति क्या है ?

उत्तर—संसार के सब मनुष्यों के समूह को मनुष्य जाति कहते हैं। मनुष्य जाति में सब देशों, रंग रूपों और धर्मों के लोग आ जाते हैं।

प्रश्न—मनुष्य जाति में इतने भेद क्यों हैं ?

उत्तर—इन भेदों के मुख्य कारण जल, वायु, देशकाल, रंगरूप, आचार व्यवहार, भाषा और धर्म की भिन्नता है।

प्रश्न—संसार की जातियों में से आपस का विरोध कैसे हट सकता है ?

उत्तर—इस के मुख्य साधन ये हैं :- ( १ ) जातियों का एक दूसरे से मिलना, (२) सामान्य हितों का ज्ञान, ( ३ ) मनुष्य मात्र में भ्रात्रिभाव का प्रचार, ( ४ ) ईर्षा द्वेष का त्याग, ( ५ ) कृत्रिम और हानि-कारक हठों की कमी। ज्यों ज्यों ये बातें अधिक होती जांयगी त्यों त्यों जातियों में मेल मिलाप और विश्वास बढ़ता जायगा।

प्रश्न—हिन्दू जाति की इस समय कैसी दशा है ?

उत्तर—हिन्दू जाति की इस समय बड़ी दुर्दशा है। मिलकर काम करने की शक्ति का तो इन में अभाव सा है। एक वर्ण दूसरे वर्ण से द्वेष करता है। छोटी छोटी बिरादरियां तो इतनी बढ़ गई हैं कि उन का गिनना बहुत कठिन है।

प्रश्न—हिन्दुओं के वर्ण कौन से हैं ?

उत्तर—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र।

प्रश्न—किन लोगों का आदर होना चाहिए ?

उत्तर—गुणों, कर्मों, विद्या और योग्यता के अनुसार मनुष्यों को समाज में स्थान मिलना चाहिए। जिस में सच्चाई, शील, परोपकार, नम्रता, न्याय, विद्या आदि है वह चाहे जिस कुल या देश में पैदा हुआ हो, माननीय है। जिस में ये गुण नहीं, किन्तु बहुत से अवगुण हैं, वह चाहे ब्राह्मण या राजकुल का ही क्यों न हो, हमारी प्रतिष्ठा का पात्र न होना चाहिए।

प्रश्न—जात पात की प्रथा कैसे चली ?

उत्तर—देशान्तर गमन, जीविका कमाने के असंख्य उपाय, स्वार्थ, मूर्खता और अभिमान ही इस के मुख्य कारण हैं। पुराने ज़माने में यहां के निवासी

दूर देशों को जाया करते थे, परन्तु समय के हेर फेर से लोगों ने अपने देश की यात्रा भी कम कर दी और इसलिए जो जहां रहते थे वे वहां वालों ही से शादी ब्याह करते रहे। इस तरह छोटी २ बिरादरियां बन गईं। इस से भी भिन्नता बढ़ी। मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्ध का ठीक ज्ञान न होने के सबब से मिथ्याभिमान भी बढ़ गया और एक बिरादरी दूसरी बिरादरी को तुच्छ और नीच समझने लगी। इस तरह कलह, द्वेष, दुराग्रह और हठधर्मी बढ़ते बढ़ते हर समुदाय की सैकड़ों शाखें हो गईं

प्रश्न—ज़ात पात के अनेक भेदों से क्या नुक़सान हुआ है ?

उत्तर—इस का फल यह हुआ है कि सब वर्णों और ज़ातों के हिन्दू आज एक जगह बैठ कर और मिल कर कोई अच्छा काम नहीं कर सकते, एक ज़ात दूसरी ज़ात को छोटा और नीच समझती है और घृणा की दृष्टि से देखती है। रिश्तेदारियां अनमेल होती हैं, विवाहों के होने में बड़ी कठिनाई होती है, कई ज़ात

वाले बिना धन लिये अपने लड़के का विवाह नहीं करते अर्थात् ठहरौनी ठहरा कर सगाई करते हैं, विद्या और वाणिज्य के लिए भी लोग विदेश जाते डरते हैं, नये पेशों के करने की आज़ादी नहीं है, पुरुषार्थ और उद्यम का देश में अभाव सा हो गया है, लोग बिरादरियों के डर से अपनी आत्मा और स्वतन्त्रता का ख़ून करते हैं।

प्रश्न—ये सब खराबियां कैसे दूर हो सकती हैं ?

उत्तर—सब जातों और बिरादरियों के मुखियों, लीडरों, और शिक्षित लोगों को इन खराबियों को दूर करना चाहिये। जगह जगह सभाएं करके लोगों के विचारों को बदलना चाहिये, नवयुवकों को अभी से जात पात की बुराईयों को समझाना चाहिये, नींच ऊंच के ख़याल को कमज़ोर कर के झूठे घमण्ड को तोड़ना चाहिये। समझदार और शिक्षित जनों को छोटे कुलों में सम्बन्ध करके अपने साहस को दिखाना चाहिये। मुख्य मुख्य जातों में कोई भेद न मनना चाहिये। उदाहरण के लिए क्षत्री मात्र, कायस्थ मात्र,

कान्यकुब्ज मात्र, अग्रवाल मात्र में रोटी बेटी का सम्बन्ध अवश्य जारी करना चाहिये।

प्रश्न—इस जात-पात के कारण सब से बड़ी हानि क्या है?

उत्तर—जात पात की सब से बड़ी हानि यह है कि हिन्दू कौम के छै करोड़ आदमी-जिन्हें नीच या अछूत कहते हैं-अलग हैं। ये लोग धीरे धीरे इन से अलग होते जाते हैं। इन के निकल जाने से हिन्दुओं को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचेगा।

प्रश्न—इन के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर—सब से पहले यह समझना चाहिये कि लोग वे भी हमारे समान मनुष्य और हमारे भाई हैं। दूसरे इनके साथ हमारा अच्छा बरताव होना चाहिये। उन से घृणा न करनी चाहिये। उनकी शिक्षा और रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिये। उन्हें गैरों के हाथों में जाने से रोकना चाहिये।

## ५—संस्कार

प्रश्न—संस्कार क्या है?

उत्तर—संस्कार का मुख्य मतलब उन कर्मों से है जिन के करने से मनुष्य के शरीर, बुद्धि, विद्या आदि

का विकाश हो परन्तु आज कल संस्कारों से केवल कुछ विशेष कर्म समझे जाते हैं।

प्रश्न—मुख्य संस्कार कौन हैं?

उत्तर—जातकर्म, मुण्डन, विद्यारम्भ, विवाह और मृतक संस्कार।

प्रश्न—जातकर्म क्या है?

उत्तर—बच्चे के पैदा होने पर उस की सफ़ाई और रक्षा के लिए जो संस्कार किया जाय उसे जातकर्म कहते हैं।

प्रश्न—जच्चा के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

उत्तर—जिस जगह बच्चे का जन्म हो वहाँ साफ़ हवा और रोशनी ज़रूर आना चाहिए। आज कल जच्चा को रहने के लिए बड़ी गन्दी और मैली जगह दी जाती है, जिस में रहने से वह अक्सर बीमार हो जाती है। जच्चा के खाने और पहरने पर खूब ध्यान देना चाहिये। उस को कम से कम एक महीने तक हलका और अच्छा पथ्य मिलना चाहिये। शरीर में तेल का मलवाना और सावधानी से समयानुसार नहाना ज़रूरी है। मूर्ख स्त्रियाँ और नायने जच्च को कई वाहियात चीज़ें खाने को दे दिया करती हैं, उन से

परहेज़ कराना चाहिये । बच्चे के पैदा होते ही किसी होशियार दाई को बुलवा कर सब काम करवाना चाहिये । झाड़ फूँक, जादू टोना, उतार पुतार के फेर में पड़ कर वृथा दुःख उठाना ठीक नहीं । इन सब से कोई फ़ायदा नहीं. किन्तु उलटे बच्चे या माँकी जान ख़तरेमें पड़ जाया करती है।

प्रश्न—बच्चे की तन्दुरुस्ती के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिये ?

उत्तर—बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिए नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है।

( १ ) माँ का खाना हलका और अच्छा हो, क्योंकि माँ के खाने से ही माँ का दूध बनता है।

( २ ) जो दूध माँ पिए वह साफ़, ताज़ा, ख़ूब पका हुआ और निरोग गाय का हो।

( ३ ) मकान साफ़, हवादार और धूपदार हो।

( ४ ) बच्चे और माँ को मौसम और वक्त के मुआफ़िक़ थोड़ी देर शुद्ध हवा में ज़रूर जाना चाहिये।

( ५ ) बच्चे और माँ के पहरने और बिछाने के कपड़े साफ़ और ऋतु के अनुसार हों।

( ६ ) हर आदमी औरत या नौकर की गोद में बच्चे

को दे देने से उसे कई छुतहीं बीमारियाँ हो जाती हैं।

( ७ ) बच्चा को अफ़ीम खिला कर हरगिज़ न सुलाना चाहिए।

( ८ ) ठण्ढा और देर का रक्खा हुआ दूध लड़कों के लिए बहुत हानिकारक है।

( ९ ) बच्चों को बहुत जेवर न पहनाओ, इन से शरीर की बाढ़ रुकती है और जान ख़तरे में रहती है।

( १० ) बच्चे के बीमार होंने पर अटकलपच्चू दवा न करो, किन्तु अच्छे डाक्टर की सलाह से इलाज करो। बीमारी के शुरू होते ही डाक्टर से सब हाल कहो।

( ११ ) स्यांने, फकीरों, मुल्लां, मोलवियों और पाखण्डियों के तावीज़ झाड़फूँक, मन्त्र तन्त्र, जादू टोने के चक्कर में हरगिज़ मत पड़ो।

( १२ ) बच्चों को ज़बरदस्ती चलाने फिराने से उन के हाँथ पैर टेढ़े हो जाते हैं और कभी २ नस भी उतर या चढ़ जाती है।

( १३ ) छोटे बच्चों को दूध पर ही रखना चाहिए। बहुत जल्द अन्न देने से उन के पेट में कई रोग हो जाते हैं।

( १४ ) चेचक का टीका शीघ्र लगवाना चाहिए।

( १५ ) बड़े बच्चों को शुद्ध हवा में रोज़ ले जाया करो।

( १६ ) बच्चों को भूत, प्रेत, हौव्वा आदि से मत डराओ।

( १७ ) बच्चों के सामने कभी कोई ऐसी बात न करो जो उनके स्वभाव को बिगाड़े। चिड़चिड़े, रोने और ज़िद्दी बच्चे तन्दुरुस्त नहीं रहते।

( १८ ) भोजन और इलाज में कभी किफ़ायत मत करो, नहीं तो बाद में धन भी खर्च होता है और जान भी जाती है।

( १९ ) नौकरों और धाइयों की सफ़ाई का ख़याल रक्खो।

( २० ) जहाँ पर लोग गलियों से फिर कर आते रहते हों वहाँ बच्चों को लोटने से मना करो।

( २१ ) नालियों और कूड़ाघरों के पास बच्चों को लेकर न बैठो। वहाँ की हवा ज़हर का असर रखती है।

प्रश्न— मुण्डन क्या है ?

उत्तर—मुण्डन किसी देवी, देवता, तीर्थ, नदी, मदार या क़ब्र के पास होता है। वहाँ किसी नाई से बच्चे के बाल बनवा दिए जाते हैं और स्त्रियाँ कई

ऊटपटाँग बातें करती हैं जिन से कोई फ़ायदा नहीं होता। इस का सुधार होना चाहिये।

प्रश्न—विद्यारम्भ संस्कार क्या है?

उत्तर—बालिका या बालक को विद्या आरम्भ कराना विद्यारम्भ संस्कार है। इस संस्कार का महत्व यह है कि विद्या का आरम्भ नियत समय पर हो जाने से विद्या-प्राप्ति का गौरव और उस की आवश्यकता मालूम हो जाती है, और माता पिता आदि अपनी ज़िम्मेवारी को ज़रा अधिक समझते हैं। यज्ञोपवीत और विद्यारम्भ का अभिप्राय एक ही है।

प्रश्न—हिन्दुओं में विवाह की क्या रीति है?

उत्तर—आज कल विवाह की कोई एक रीति नहीं है, कहीं कुछ और कहीं कुछ है। प्रायः पहले लड़के और लड़की की जन्मपत्री मिलाई जाती है, फिर नाई, प्रोहित या किसी पड़ोसी के द्वारा सगाई पक्की करली जाती है और फिर सगाई हो जाती है। नाच, आतशबाज़ी, दावत, भूर और सोहगी आदि विवाह में बहुत हुआ करते हैं। आज कल के विवाह शास्त्रोक्त विवाह नहीं कहे जा सकते।

प्रश्न—वर्तमान विवाहों में क्या दोष हैं ?

उत्तर—बालविवाह, बहुविवाह और वृद्धविवाह मुख्य दोष हैं।

प्रश्न—बालविवाह से क्या हानियाँ हैं ?

उत्तर:-

१—बालविवाह का स्त्रियों पर असर।

(क) विधवाओं का बढ़ना।

(ख) प्रसव के समय माँ का तरह तरह की पीड़ाओं और रोगों का शिकार होना।

(ग) दूध पिलाते २ क्षय रोग का हो जाना।

(घ) बार बार प्रसव होने से गर्भाशय का ख़राब हो जाना।

(ङ) अधिक सन्तान बढ़ने से माँ की चिन्ताओं का बढ़ना।

२—पिता पर असर।

(क) रोगों का बढ़ना।

(ख) उमर का घटना।

(ग) कमज़ोरी के सबब कोई काम न कर सकना।

(घ) बदहज़मी।

(ङ) शीघ्र मर जाना।

३—सन्तान पर असर।

(क) सन्तान का गर्भ में मर जाना।

(ख) पैदा होते ही मर जाना।

(ग) ज़िन्दगी भर कमज़ोर और बीमार रहना।

प्रश्न—विवाहसंस्कार में किन किन बातों के सुधारने की ज़रूरत है?

उत्तर—लड़कों का विवाह कम से कम २२ वर्ष और लड़कियों का कम से कम १४ वर्ष की उम्र के पूर्व न होना चाहिए। ठहरौनी को बिलकुल उठा दो। माता पिता जो कुछ खुशी से दें उस पर सन्तोष करना चाहिये। कन्याओं को बेचने वाले अपनी अपनी ज़ातों से बाहर किए जायं। आतशबाज़ी, नाच और इसी प्रकार की दूसरी फुज़ूलखर्ची बन्द की जायं। जो बुढ़ापे में या एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करें उनका तिरस्कार सब को करना चाहिए।

प्रश्न—मृतक संस्कार क्या है?

उत्तर—मृतक देह को अच्छी तरह फूँकना मृतक-संस्कार है। मृतक संस्कार के समय बड़ी बड़ी विचित्र बातें की जाती हैं, इन्हें कम करना चाहिये। मृतक पुरुष के घर वालों की तकलीफों और असुविधाओं को जहाँ तक हो सके घटाना चाहिए।

# ६–सदाचार ।

प्रश्न—सदाचारी कौन है ?

उत्तर—जो सदाचार के अङ्गों का पालन करता है वह सदाचारी है ।

प्रश्न—सदाचार के कुछ अङ्गों के नाम बताओ ?

उत्तर—१ सत्य, २ न्याय, ३ पुरुषार्थ, ४ धी, ५ दम, ६ स्वतन्त्रता, ७ धृति, ८ क्षमा, ९ निर्भयता, १० सङ्कल्प, ११ पश्चाताप, १२ निरभिमानता, १३ अस्तेय, १४ शौच, १५ अक्रोध ।

प्रश्न—इन सब को समझाओ ?

१ सत्य—सच मानना, सच बोलना, और सच ही करना सत्य है । जिस मनुष्य में सचाई नहीं वह चाहे जितना बड़ा विद्वान और धनवान हो तो भी नीच है । झूठे का कोई विश्वास नहीं करता । सब लोग उस पर सन्देह करते हैं और वह भी सदा डरता रहता है । अगर तुम से कोई अपराध हो जाय तो उसे हरगिज़ न छिपाओ, क्योंकि एक पाप के छिपाने के लिए सैकड़ों पाप करने पड़ते हैं और अन्त में सचाई जाहिर हो जाती है, तब

पहले से भी अधिक शरमाना पड़ता है। अगर असत्य से तुम्हें शीघ्र सफलता होती मालूम हो तो उसे सफलता न समझो, क्योंकि ऐसी सफलता चिरस्थायी नहीं होती। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत रहो। सत्य सदाचार की नींव और धर्म्म का स्तम्भ है। "सत्य के समान दूसरा तप नहीं, और झूँठ के बराबर दूसरा पाप नहीं," इस लिए सत्य का आचरण करते हुए जीवन व्यतीत करो।

२ न्याय—सब से यथायोग्य बरतना न्याय है। जो दूसरों के अधिकार और हक़ की परवा नहीं करता वह अन्याय करता है। अन्याय से संसार में फूट, कलह, हिंसा और छल की वृद्धि होती है। जिस घर के लोग एक दूसरे के साथ न्याय नहीं करते वहाँ हमेशा झगड़े हुआ करते हैं। जिस देश में एक जाति दूसरी जाति पर अन्याय करती है वहाँ फूट के पैर जम जाते हैं। राजा के अन्यायी होने से प्रजा में बेचैनी फैलती है, और प्रजाकी बेचैनी से राज नष्ट हो जाता है।

न्याय मनुष्यों का रक्षक और पालक है, इस लिए सब को न्याय का आचरण करना चाहिए।

३ पुरुषार्थ—जिस पुरुष में पुरुषार्थ नहीं वह पुरुष कहलाने के योग्य नहीं। सदा अच्छे कामों में लगे रहना ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थी विघ्नों से नहीं डरता। वह अपने मन और शरीर को वश करने के लिए सदा उद्योग करता है, हम पुरुषार्थ द्वारा नीच भावों और दोषों को छोड़ उत्तम भावों और गुणों को धारण कर सकते हैं। पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का साधन है।

४ धी—धर्माधर्म, कर्तव्याकर्तव्य, पवित्रापवित्र, नित्यानित्य में भेद करने वाली बुद्धि का नाम धी है। इसी को विवेक कहते हैं। सब से बड़ा विद्वान वही है जिस ने इस विवेक को प्राप्त किया है। मनुष्य धी को पाकर शान्त हृदय और सत्यनिष्ठ हो जाता है। संसार की लालचें फिर उस के पास नहीं आतीं, क्योंकि वह उन के बुरे परिणामों को जानता है।

५. दम—मन को वश में करना दम है। मन को वश करने वाला पापों को दबा लेता है क्यों कि पाप की उत्पत्ति मन से ही है। बुरे काम करने का भाव पहिले मन में होता है और जिस ने मन को वश में कर लिया उस ने मानो सब पापों को जीत लिया।

६. स्वतंत्रता—तुम ने देखा होगा कि जो मनुष्य बोझ से लदा है वह बड़ा दुखी है; जब वह उस बोझ को उतार देता है तो वह सुखी होता है। क़ैदखाने में पड़े हुए क़ैदियों की जो दशा होती है उसे सब जानते हैं। अब तुम समझ गए होगे कि परवशता कितनी बुरी चीज़ है। जो क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, अहंकार, मिथ्या विश्वास और अविद्या की जंज़ीरों से बंधे हुए अपनी स्वतंत्रता को खो चुके हैं उन से कभी कोई अच्छा काम नहीं हो सकता। जिस में मानसिक स्वतन्त्रता नहीं वह सदाचारी नहीं हो सकता। इन्द्रियों और मन की दासता से छुटकारा पाना ही सच्ची स्वतन्त्रता है।

७ धृति—जो संसार में धर्म जीवन व्यतीत करना चाहते हैं उन के लिए धैर्य्य नौका का काम देता है। चाहे ज़ोर की आँधी चले और चाहे पृथ्वी उलट पलट होजाय परन्तु धर्म में विश्वास रखने वाले अपने मार्ग से नहीं हटते। बहुधा लोग स्वार्थी और पापी जनों को फलता फूलता देख कर धर्म से विमुख हो जाते हैं। उन्हें याद रखना चाहिये कि अन्त में धर्म की जय होती है।

८ क्षमा—अगर हमें कोई नुकसान पहुंचाए, हमें तकलीफ दे, हमारी निन्दा करे और फिर भी हम उस से उस का बदला न लें तो हम उसे क्षमा करते हैं। क्षमा-शील पुरुष के शत्रु नहीं होते। वह अपराधी की मूर्खता और नीचता पर दया करता है और अपनी साधुता और उदारता से उस पर अपना असर डालता है। बुराई बुराई से नहीं दबती। जिस घर के लोग एक दूसरे को बरदाश्त नहीं करते, जिस जाति या गाँव के लोग ज़रा ज़रा सी बात पर अदालत लड़ते हैं, जहाँ झूठा अभिमान बहुत है वहाँ क्षमा का वास नहीं होता। बदला लेने की शक्ति रखते हुए भी बदला न लेना सच्ची क्षमा का चिह्न है।

८ निर्भयता—भय कमज़ोरी की निशानी है। भयभीत मनुष्य की बुद्धि और शरीर बेकाम हो जाते हैं। जहाँ सचाई और न्याय है वहाँ भय नहीं होता। बुरे कर्मों के बुरे फल से ज़रूर डरो। परन्तु अच्छे कर्मों के करने और अच्छे विचारों के फैलाने से कभी न डरो। धर्म के आचरण करने में जो विघ्न और आपत्तियाँ आती हैं उन से डरने वाला धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी नहीं, क्योंकि, वह धर्म के तत्व को नहीं समझता; हमें प्रह्लाद और सुकरात की तरह हमेशा निर्भय रहना चाहिए।

९. सङ्कल्प—"मैं कभी झूठ न बोलूँगा" "देश के सुधार में अपना जीवन लगा दूँगा" अपनी "प्रतिज्ञा को ज़रूर पालूँगा" ऐसे २ पक्के इरादों का करना ही धार्मिक सङ्कल्प है। बिना सङ्कल्प के दृढ़ता नहीं आती और बिना दृढ़ता के धर्म का आचरण नहीं होता। जो सोचते बहुत हैं परन्तु सङ्कल्प द्वारा कभी किसी बात का निश्चय नहीं करते उन का जन्म बातों में ही बीत जाता है।

११ पश्चाताप—अपने पापों, दोषों और अपराधों पर शोक करना ही पश्चाताप है। पश्चाताप सुधार का चिह्न है। पश्चाताप पापों से घृणा पैदा कराता है। जो पश्चाताप नहीं करते उन के हृदय मैले और कुन्द हो जाते हैं।

१२ निरभिमानता—अभिमान मूर्खता का चिह्न है। जब कि योग्यता और पात्रता के होतेहुए भी अभिमान करना बुरा है तो वृथा अभिमान तो अत्यन्त निन्दनीय है। जबकि सिकन्दर, और नेपोलियन ऐसे बादशाहों का भी अभिमान टूट गया तो हमारा कुछ धन और माल पर अभिमान करना महा मूर्खता है। जब सुकरात और कफलातूँ तक ने यह कह दिया, कि हमारा ज्ञान राई के दाने से भी कम है, तो साधारण आदमियों का ज़रा सी विद्या पर घमण्ड करना तुच्छता है। विद्या का फल विनय और धन का फल दान-शीलता होना चाहिए।

१३ अस्तेय—दूसरे की चीज़ या अधिकार को न चुराना अस्तेय है । हाथों से पदार्थों की चोरी करने को तो सब बुरा कहते हैं परन्तु मन में किसी के नाम, अधिकार या धन के लेने की इच्छा करना भी चोरी है । अस्तेय के पालन के लिए सन्तोषी और निर्लोभी होना चाहिए । चोरी करने वाला दूसरों को तकलीफ़ देता है और अपनेआप को छिपाता है । कभी किसी की छोटी सी छोटी चीज़ भी बिना पूछे मत लो । असली बात को छिपाना सत्य की चोरी है । घटिया माल को बढ़िया कह कर बेचना और इम्तहान में नक़ल करना भी चोरी है । ईमानदारों का दिल मज़बूत और मन खुश रहता है ।

१४ शौच—शौच दो प्रकार का है । बाहरी शौच से शरीर, वस्त्र आदि की सफ़ाई होती है और भीतरी शौच से मन की सफ़ाई होती है । जिस का शरीर साफ़ और मन मैला

है वह अशुद्ध है। द्वेष, छल, लोभ, अहङ्कार, परनिन्दा का त्याग मानसिक शौच है।

१५ अक्रोध—क्रोध न करना अक्रोध है। क्रोधी मनुष्य की सूरत बिगड़ जाती है और ज़बान से ऐसी बातें निकाल देता है जिन के लिए उसे पीछे पछताना पड़ता है। क्रोध की अग्नि को क्षमा के जल से बुझाना चाहिए। मूर्ख लोग क्रोध में आकर जड़ पदार्थों, पशुओं और बच्चों को गालियाँ देने लगते हैं और अपने सिर को पटकते और रोते हैं। क्रोध बैर और अन्याय का बढ़ाता है इस लिए क्रोध को सदा दबाते रहो।

## ७—व्यवहार और नीति।

प्रश्न—व्यवहार क्या है और उस की क्या आवश्यकता है?

उत्तर—व्यवहार अनेक प्रकार के हैं परन्तु यहाँ उन्हीं व्यवहारों का वर्णन होगा, जिन की ज़रूरत प्रत्येक सभ्य नर नारी को समाज में पड़ती है। दूसरे से हमें कैसे बरताव करना चाहिए

सभ्य समाज में हमें कैसे उठना बैठना और बात चीत करना चाहिए, बड़ों छोटों और बराबर वालों की ओर हमारा क्या कर्तव्य है इत्यादि सब बातें व्यवहार में आ जाती हैं। संसार में बहुधा लोग छोटी छोटी बातों और व्यवहारों को न जानने के कारण जीवन भर दुखी रहते और कभी कृतकार्य्य नहीं होते।

प्रश्न—वाणी के व्यवहारों में किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर—वाणी का बड़ा महत्व है। इस के द्वारा हम अपने विचार प्रकट करते हैं। राजदरबार और सभाओं में अच्छे वक्ता की खूब चलती है। वाणी से श्रोताओं का मन पलट कर हम उन्हे अपनी ओर कर सकते हैं। बुद्ध, शङ्कर, दयानन्द, डिमास्थनीज़, बर्क, ग्लैडस्टोन ने वाणी के प्रभाव से बड़े बड़े काम किये। वाणी का ठीक उपयोग करने से हम शत्रु को मित्र, लोभी को दानी, क्रोधी को शान्त, दुखी को सुखी, कायर को वीर और सभय को निर्भय कर सकते हैं। किन्तु उस के दुरुपयोग से हम अपना और दूसरों का नुकसान भी कर सकते हैं।

अतएव इन शिक्षाओं पर सदा ध्यान दो :—
बिना समझे मत बोलो, बिना ज़रूरत बोलने वाले का मान नहीं होता। जो लोग हमेशा हर बात में अपनी राय दे देते हैं उन की राय की क़दर नहीं होती। बहुत बोलने वालों की बात प्रायः झूठ समझी जाती है या उस में झूठ मिला रहता है। पहले कुल बात को सुन लो, बीच में मत बोलो, बहुत जल्दी जल्दी या धीरे धीरे बोलना भी अच्छा नहीं। बात चीत में हठ, अभिमान, अश्लीलता और कटुता को कदापि न आने दो। हठ से झूठ सच की पहचान नहीं होने पाती। अभिमान से तबियत का हलकापन ज़ाहर होता है। अश्लीलता-गाली गुफ़्ता-असभ्यता का चिह्न है। कटुता से दूसरों का दिल दुखता है और मनोमालिन्य का उदय होता है। हठी के सामने मौन धारण करो नहीं तो वृथा झगड़ा खड़ा हो जायगा। अगर कोई अपनी बात गुप्त रखना चाहे तो उस से आग्रह मत करो। जो जिस के योग्य है, उस से वैसी ही बात करो। अतिगूढ़ और सूक्ष्म विषयों पर मूर्खों के सामने मत बोलो क्योंकि

वे उन का उपहास करेंगे। शुभ अवसर पर अशुभ वाक्य कभी न निकालो । बातें करते समय हाथ, शिर, मुँह, आँख का हिलाना बुरा है। बातें करते २ दूसरों के किसी अङ्ग को पकड़ लेना, मुख या कान के निकट खिसक जाना, सब के सामने कानाफुसकी करना, बात करते २ खखारना, उबासी लेना, नाक छिनकना, अँगड़ाई लेना और नाक भौं चढ़ाना इत्यादि हरकतें बद-तमीज़ी की निशानी हैं। हँसी में भी कभी मिथ्या न बोलो, क्योंकि इस से तुम्हारा विश्वास कम होगा । किसी सुनी सुनाई या उड़ती हुई बात को इस तरह से न कहो कि लोग उसे सच समझलें । दूसरों को बदनाम करने वाली बात चीत से हर वक्त परहेज़ करो। किसी अच्छे आदमी की भी बिना ज़रूरत तारीफ़ न करो। बे-मौका सही तारीफ़ को भी लोग खुशामद समझेंगे। उन वाक्यों को कभी न निकालो जो भय, लज्जा या शोक के उत्पन्न करने वाले हों । जहाँ तक हो सके आपस में अपनी ही भाषा बोलो । जिस शब्द की शुद्धता में तुम्हें सन्देह हो उस का प्रयोग

न करो। किसी के अवगुणों या दोषों को जगह २ मत कहो। इस से न तुम्हारा ही लाभ है न किसी और ही का। अपने परम-मित्र या छोटे से भी सभा में ऐसे ढंग से न बोलो जो उस के मान को घटावे। किसी की घराऊ या गुप्त बातों का खोलना बुरा है। सदा मिष्ठ, मित, सच, स्पष्ट और समयानुकूल भाषण करो।

प्रश्न—उठने बैठने में किन बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर—कुसंग में कभी न बैठो, क्योंकि वहाँ नशेबाजी, जुआ, परनिन्दा, छल, कपट आदि पाप निवास करते हैं। अकड़ कर शेखी के साथ बैठना बार बार टोपी सुधारना, मूंछे मरोड़ना, इधर उधर ताकना, किसी की तरफ़ उँगली उठाना किसी के सामने पाँव या पीठ करना, घुटनों के बल बैठना, या घुटनों के ऊपर दोनों चढ़ा कर बैठना अनुचित है। बैठे हुओं में लेटना और लेटे हुओं में बैठना भी ठीक नहीं; क्योंकि इस से कभी हम को और कभी उन को लिहाज़ करना पड़ता है। विद्वानों और बड़ों

के सम्मुख इस तरह बैठो कि उन का अपमान न हो। सभा में ऐसे स्थान पर बैठो जहाँ से तुम्हें उठना न पड़े। सभा में खट पट करते हुए जाना, कुर्सी और दरवाज़े को ज़ोर से घसीटना खोलना या बन्द करना, ऐसी जगह खड़ा होना या बैठना जिस से दूसरों को असुविधा हो, बैठे २ गप्पें मारना, सिगरेट पीना, खर्राटे लेना, औंघाना, बिना ज़रूरत देरतक ताली पीटना, बार बार वाह वाह, हिअर हिअर, आर्डर आर्डर करना बुरा है। खाली कभी न बैठो कुछ काम करते ही रहो ! खाली बैठने से मन में तरह तरह के अयोग्य विचार उत्पन्न होने का डर है। उत्तम पुस्तकों और समाचार पत्रों का संग्रह किया करो ताकि खाली समय में काम आवें। ताश, चौपड़, परनिन्दा और गपशप में अमूल्य समय को कभी नष्ट न करो। बाज़ार में कभी ऐसी चाल से न चलो कि लोगों का ध्यान तुम्हारी तरफ़ खिंचे। रास्ते में सामने और नीचे देख कर चलो। तंग रास्ते में खड़े २ देर तक बातें करना ठीक नहीं। स्त्रियों और बालकों को सदा रास्ता दो।

प्रश्न—रहन-सहन का क्या नियम है ?

उत्तर—रहन में शुद्ध वायु, विस्तृत स्थान, उत्तम पड़ोस का सदा ख्याल रक्खो। पहनने के कपड़े साफ़ सुथरे और ऋतु के अनुसार हों। कपड़ों की काट छांट सीधी हो। तड़क भड़कदार कपड़ों से शोभा नहीं बढ़ती। चेहरे की कान्ति तो शुद्ध आहार-विहार सदाचार और स्वास्थ्य के अच्छा रखने से बढ़ती है; बहुत तेल लगाने, बाल रखाने, शरीर को साबुन से रगड़ने से असली चमक नहीं आती। भूषण, पुष्प, और सुगन्धित से भी कोई विशेष लाभ नहीं; जिस का स्वभाव सरल है जो बनावट और दिखावट से दूर रहता है, जिसकी वाणी मधुर-भाषिणी और मन पवित्र है उस का आदर सब जगह होता है। बाहरी आडम्बरों से शरीर को भी कोई सुख नहीं मिलता, किन्तु अनावश्यक कष्ट उठाना पड़ता है।

प्रश्न—माता पिता के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए ?

उत्तर—माता पिता के हमारे ऊपर बड़े २ अहसान हैं, उन्हों ने बड़े कष्ट उठा कर हमारा पालन

किया है, उन से बढ़ कर हमारा शुभचिन्तक संसार में कोई नहीं हो सकता । सदा उन का आदर करो, उन के सामने कभी हँसी दिल्लगी मत करो। उन की आज्ञा और इच्छा को सदा पूरा करो, यदि वह सत्य और सदाचार के विरुद्ध नहीं है। तन, मन, धन से सदा उन की सेवा करो। कभी उन से ऐसी बात न कहो जो उन को दुखदाई हो।

प्रश्न—सन्तान से कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

उत्तर—माता पिता को चाहिए कि सन्तान के स्वास्थ्य, शिक्षा और संग पर सदा ध्यान रक्खें । उसे आलसी और दुराचारी न होने दें। छोटे छोटे दुर्व्यसनों से उन्हें दूर रक्खें । अधिक दण्ड और अधिक लाड़ दोनों ही बुरे हैं। वे सन्तान के सामने अयोग्य बात का कहना, करना और बरतना छोड़ दें । सन्तान के बड़े होजाने पर उन से मित्र का सा बरताव करें। बात २ में झिड़कना या गुस्सा होना भी बुरा है।

प्रश्न—भाई भाई के साथ कैसा बरताव करें ?

उत्तर—प्रेम और न्याय, सहानुभूति और समान अधिकार ही भ्रातृभाव की जड़ है। भाई के दुख में

दुख और सुख में सुख मानो। यदि भाई के साथ कुछ उपकार करो तो उसका ज़िक्र कभी मत करो। अगर किसी कारण से अनबन हो जाय तो फ़ौरन मेल करलो। भाई की शिकायत दूसरों से मत करो क्यों कि इससे विरोध बढ़ता है। भाई के अधिकार या धन लेने की इच्छा स्वप्न में भी मत करो। छोटे भाई को सब के सामने घुरकना अनुचित है। ईर्षा द्वेष के भावों को सदा यह सोच कर दबाओ कि हम एक ही माता की गोद में पाले गये हैं।

प्रश्न—मित्रों में कैसा व्यवहार होना चाहिये ?

उत्तर—सच्चा मित्र वह है जो हानि, लाभ, सुख, दुख में सहायक हो। सदा धर्म और सदा चार की ओर लेजावे। बुद्धिमान और सत्य मित्र को ग्रहण करो। खुशामदी और खुद-गरज़ लोगों को अपना दुश्मन जानो। मित्र से छल कभी न करो। मित्रता ऐसी बारीक डोर है जो ज़रा में टूट जाती है। लेन देन और व्यापार को मैत्री में कभी न आने दो। बड़े २ पक्के मित्र यहां आकर ठोकर खा जाते हैं। चाहिये तो यह कि सच्चे

मित्र पर सारी सम्पदा नेवछावर करदो। धन ।। क्या, अपनी जान भी उस के लिये दे दो। मित्र के अपराध पर कभी क्रोध न करो किन्तु क्षमा और सहनशीलतता को अपना भूषण बनाओ?

प्रश्न—स्त्रियों से कैसा व्यवहार करना चाहिये।

उत्तर—स्त्रियों को सदा पूज्य दृष्टि से देखो। उन पर कभी कोई अन्याय और अत्याचार न होने दो। यदि कोई दुष्ट आदमी स्त्रियों की निन्दा करता हो तो उसे ऐसा करने से रोको। उन के दोषों को सावधानी और सहानुभूति के साथ दूर करो। स्त्रियों के सामने गाली कभी मत बको। माता, बहिन, पुत्री, पत्नी या अन्य किसी भी स्त्री को गाली देना बड़ी नीचता है।

प्रश्न—नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर—नौकर बहुत प्रकार के होते हैं। समय और पद के अनुसार उन से बरताव करना चाहिए।

परिश्रमी, विश्वासपात्र और समझदार नौकर रक्खो। उस से ऐसा काम न कराओ जो उस की शक्ति और बुद्धि के बाहर हो। नौकरों पर ज़रा २ सी ग़लती पर बिगड़ना भी ठीक

नहीं। उस के सुख, दुख का ख्याल रक्खो। सदा अपने ही मतलब को न देखो। उसे निर्लज्ज और निर्भय न होने दो। कुचाली नौकर को नीति से निकाल दो, परन्तु निकालते समय उसे अपना शत्रु न बनाओ।

## ८—पाखण्ड।

प्रश्न—पाखण्ड किसे कहते हैं?

उत्तर—पाखण्ड का अर्थ झूठ, छल, दम्भ, मूर्खता और कुरीति है। जो क्रियाएं, विश्वास या रीतियाँ सत्यज्ञान और उन्नति के विरुद्ध और हानि कारक हैं वे सब पाखण्ड कहलाने के योग्य हैं।

प्रश्न—आज कल हिन्दू जाति किन किन पाखण्डों में फँसी हैं?

उत्तर—आज कल हिन्दुओं में सैकड़ों झूठी और हानिकारक बातें फैली हुई हैं, उन में से मुख्य मुख्य ये हैं:—

( १ ) जो कुछ प्रकृति के अटल क़ानून के विरुद्ध बताया या माना गया है वह सब मानने योग्य नहीं।

( २ ) 'पृथ्वी बैल के सींग पर है' 'दूध और दही के समुद्र हैं' 'आसमान से फूलों और बताशों की वर्षा हुई' 'गिटकी के रुपये बन गये' 'अन्धे ने देखा और बहरे ने सुना।' इत्यादि बातों पर कभी विश्वास न करो।

३ तन्त्र, यन्त्र, गण्डे, तावीज़, झाड़, फूँक सब मिथ्या हैं। कुछ मुल्ला, मोलवी, अघोरी, स्याने और भोली स्त्रियों और गवारों को बहुत ठगते हैं। कोई कहता है 'हम मन्त्रसे साँप का विष उतारते हैं' कोई कहता है 'हम पानी बरसाते और आग बुझाते हैं।' कोई कहता है गण्डे और तावीज़ से जुआ जितवाते और चोरी करवाते हैं। ऐसे धूर्तों से बचना चाहिए।

( ४ ) भूत, प्रेत और डायन, चुड़ैल की कहानियाँ भी मिथ्या हैं। मूर्ख लोग कई दिमाग़ी बीमारियों को भूत समझ लेते हैं। वे मिरगी, मूर्च्छा, हिसटीरिया, सरसाम आदि रोगों के कारणों को न समझ कर भूत उतारते फिरते और वृथा कष्ट उठाते हैं। कई शरीर औरतें घर-

वालों और पड़ोसियों को डराने और अपनी पूजा कराने के लिए बहुत से छल करती हैं।

( ५ ) मसानी, झखई, ज़हरपीर, भकभका, सदार, चौराहा, जोगनी, दिशासूल आदि भी सब मिथ्या कल्पनाएँ हैं। इन का वि-वास विद्या के प्रकाश से धीरे २ उठता जाता है।

( ६ ) बच्चों को नज़र लगने का ख़याल भी ग़लत है। जिस को नज़र लगना कहते हैं वह कोई रोग होता है, जिस का इलाज़ फ़ौरन कराना चाहिए।

( ७ ) मुहूर्त और घड़ी का विचार जैसा आज कल फैला है वह अत्यन्त हानिकारक और कष्ट दायक है। ठीक समय पर सोच विचार कर काम करना तो बहुत अच्छा है परन्तु मुना-सिब वक्त पर पहुँचने वाली ट्रेन से सफ़र न करना, बिना ज़रूरत कई कई दिन तक परदेश में पड़े रहना कहाँ की अक़्लमन्दी है। कई लोग मुहूर्त के चक्कर में पड़कर वाणिज्य-व्यापार करना, मकानात बनवाना, वस्त्र सिलवाना, चारपाई बिनवाना, कुँआ

खुदवाना, यहाँ तक कि कपड़े बदलाना, बाल बनवाना और दवा खाना तक छोड़ देते हैं। इन सब बातों का नतीज़ा दुःख के सिवा और कुछ नहीं होता।

( ८ ) बहुत से लोग उल्लू के बोलने, बिल्ली के रास्ता काट जाने, छींक आने, परदेश जाते हुए टोके जाने से भी डरते हैं। क्या ऐसे डरपाकों से दुनियाँ में कुछ हो सकता है ?

( ९ ) नाम से, रमल से, गिनती से, फल फूल से मन की बात बताना बड़ी ठग विद्या है। इस पर विश्वास मत करो।

( १० ) बहुत सी मूर्ख स्त्रियाँ बच्चों की जीवन-रक्षा के लिए उनके खराब नाम रखतीं, उन से भीख मँगातीं, गण्डा तावीज़ बाँधतीं और क़बरों और मसज़िदों में जाकर तरह २ की मानता मानती हैं। इस से धन, धर्म और प्रतिष्ठा तीनों का नाश होता है।

( ११ ) इस देश में इतनी घोर मूर्खता है कि लोग रोगों के देवी देवताओं में भी विश्वास करते

हैं ; हैज़ा, चेचक, प्लेग, हिस्टीरिया वग़ैरह को किसी देवी देवता का कोप समझते हैं।

( १२ ) जन्मपत्र के कारण भी प्रायः लोग ठगे जाते हैं। जन्मपत्र से ही मनुष्यों के जीवन, मरण, व्यापार, नौकरी, मित्रता, शत्रुता, मुक़दमा, रोग, सन्तान, स्त्री, रूप, विद्या, धन, आयु, यश आदि सब का निश्चय किया जाता है। जन्मपत्री के कारण लोग कभी २ सुख से दुख और दुख में सुख मान लेते हैं। ग्रहदशा का फल सुन कर झूँटे वाँधनू वाँधते और काहेल हो जाते हैं। जन्मपत्रों से विवाह के होने में वड़े विघ्न पड़ते हैं! वर-कन्या के गुण कर्म को न मिला कर आसमानी कुलावे मिलाते हैं।

( १३ ) करामात करने वाले भी पाखण्डी हैं। सोना वनाना, पानी का दूध कर देना, देश २ की चीजें मँगा देना, शीशा चवाना, जलते हुए अङ्गारे निगल जाना, आग पर चलना, काटों पर वैठना आदि सब वातों के करने और दिखाने में कोई और तरकीव होती है जिस को साधारण लोग नहीं जानते।

(१४) आज कल के फ़क़ीरों और नाम मात्र के साधुओं को मानना, पूजना और देना मूर्खता है। इन में से अधिकतर महामूर्ख, कुचाली, नशेवाज़ और हठी होते हैं। दिन भर आग तापते, भाँग, गाँजा, चरस, तमाखू पीते और सब को उलटी सीधी सुनाया करते हैं। कोई इन से अच्छी से अच्छी वात भी कहे तो नहीं मानते, विद्वानों की निन्दा करते और अपने आपको सिद्ध मसमझते हैं। इन में से कोई चोर, डाकू और खूनी हुआ करते हैं जो क़ैदखानों से भाग कर भेष वदल लेते हैं। इन को दान देने से देश की वड़ी हानि है।

(१५) चेला चेली होना, किसी मनुष्य के पैरों का धोवन पीना, किसी की जूठन खाना और उसे साक्षात ईश्वर समझना वड़ी मूर्खता है हाँ, विद्वान, सदाचारी और परोपकारी महात्मा का आदर सत्कार करना विलकुल ठीक है।

प्रश्न—हिन्दू लोग पाखण्ड की वातों को क्यों मानते हैं?

उत्तर—हिन्दुओं में अविद्या और मूर्खता छाई हुई है, उन की पुरानी बातों में अंध श्रद्धा है, आज कल की ज़रूरतों पर कम ध्यान देते हैं, अपने हानि लाभ का भी ख़याल नहीं करते इसी से सैकड़ों पाखण्डों के फेरे में पड़ कर दुःख उठाते जाते और पछताते जाते हैं।

## ६—समाज सुधार।

प्रश्न—समाज सुधार से क्या मतलब है?

उत्तर—हिन्दुओं में अनेक प्रकार के हानिकारक रीति-रवाज और कुसंस्कार जारी हैं, उनका सुधारना समाज सुधार है।

प्रश्न—इन के सुधारने की क्यों ज़रूरत पड़ी?

उत्तर—क्यों कि वे समाज के लिए अच्छी नहीं।

प्रश्न—समाज के लिए अच्छी या बुरी बात की क्या पहचान है?

उत्तर—जिन बातों से देश के धन, शक्ति, विद्या, सदाचार आदि की उन्नति हो जिस का फल वर्तमान भावी सन्तानों के लिए सुखकारी हो वे अच्छी हैं, और इस के विपरीत बुरी।

प्रश्न—आज कल हिन्दुस्तान में समाज सुधार के सम्बन्ध में लोगों के क्या विचार हैं ?

उत्तर—( १ ) कुछ लोग पुरानी लकीर के फ़क़ीर हैं। ( २ ) कुछ लोग आज कल के नवीन विचारों को ही सुधार की जड़ समझते हैं। ( ३ ) कुछ लोग अपने देश की बातों के सामने दूसरे देश की बातों को बिलकुल तुच्छ और ख़राब समझते हैं। ( ४ ) कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें केवल सच्ची, लाभदायक और उन्नतिकारी बातें पसन्द हैं।

प्रश्न—पुरानी बातें अगर अच्छी हों तो उन का रहना अच्छा है या नहीं ?

उत्तर—अच्छा है।

प्रश्न—किसी समाज या देश की उन्नति के लिए किन २ बातों की स्वतन्त्रता होना आवश्यक है ?

उत्तर—( १ ) सोचने की स्वतन्त्रता, ( २ ) विचारों को लेख द्वारा प्रकट करने की स्वतन्त्रता ( ३ ) विचारों को वाणी द्वारा प्रकट करने की स्वतन्त्रता, ( ४ ) काम करने की स्वतन्त्रता, ( ५ ) राय बदलने की स्वतन्त्रता। किन्तु स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करना बुरा है।

प्रश्न—आज कल पुरानी बातें किन कारणों से बदल रही हैं?

उत्तर—रेल, तार, डाक, अंग्रेज़ी शिक्षा, दूसरे धर्मों से परिचय, सभाएँ, समाचारपत्र, किताबें, व्याख्यान देश की नवीन आवश्यकतायें ये मुख्य कारण हैं।

प्रश्न—वर्तमान हिन्दू-समाज में क्या अदल बदल होना चाहिए?

उत्तर—पहली बात तो लोगों के विचारों और भावों का बदलना है। उन के बदले बिना सुधार होना असम्भव है। निम्नलिखित बातों का मन, वाचा और कर्मणा से सुधार होना चाहिए। (१) जात पाँत और ऊँच नीच का ख़याल। (२) विवाह की कुरीतियाँ। (३) समुद्र यात्रा (४) साधु सुधार। (५) दान सुधार। (६) नशेबाज़ी। (७) तीर्थ यात्रा। (८) स्त्री सुधार। (९) त्योहारों का सुधार। (१०) चरित्र सुधार।

प्रश्न—जात पाँत से क्या २ हानियाँ हैं और इन में क्या २ सुधार होना चाहिए।

उत्तर—जात पाँत की हानियाँ पहले बताई जा चुकी हैं, वहाँ देखलो। मुख्य मुख्य ये हैं:-(१) हिन्दुओं

में मिल कर काम करने की शक्ति का नाश, (२) मिथ्या अभिमान, (३) छुआछूत का अनुचित विचार।

प्रश्न—विवाह की क्या कुरीतियाँ हैं?

उत्तर—बाल विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, विवाह के समय वेश्याओं का नाच, आतशबाज़ी, सोहगी, ठहरौनी, अश्लील सिठनी इत्यादि सब बातें बन्द होनी चाहिये।

प्रश्न—समुद्र-यात्रा की क्या व्यवस्था है?

उत्तर—बहुत लोग कहते हैं कि जहाज़ पर यात्रा करने और विदेश में जाकर रहन सहन करने से धर्म चला जाता है। कोई कोई यह भी कहते हैं कि समुद्र-यात्रा शास्त्र के विरुद्ध है, लेकिन ऐसा समझना ठीक नहीं। प्राचीन काल में यहाँ के लोग विदेश जाया करते थे। धर्म तो झूठ, चोरी आदि कुकर्मों से जाता है, न कि विदेश जाने से।

प्रश्न—विदेश जाने की क्या ज़रूरत है?

उत्तर—विदेश जाकर हम कई प्रकार की विद्याएँ सीख सकते हैं। व्यापार कर के देश का धन बढ़ा

सकते हैं। दूसरे देशों की सभ्यता, विद्या और देशोन्नति को देख कर अपने देश का उपकार कर सकते हैं, और अपने अनुभव को बढ़ा सकते हैं।

प्रश्न—साधु सुधार से आप का क्या मतलब है ?

उत्तर—आज कल भारत वर्ष में क़रीब ५२ लाख के साध, सन्यासी, फ़क़ीर, बाबे, नागे, वैरागी, गोसाईं; अघोरी, कनफटे, खाकी, मुंडमुड़े, फक्कड़, अक्खड़ मारे मारे फिरते हैं। इन में से अधिकाँश महामूर्ख और नशेबाज़ होते हैं। भारत वर्ष ऐसे ग़रीब देश के लिए ये एक असह्य बोझ हैं। ये सीधे साधे लोगों को और विशेष कर स्त्रियों को ठगते और खूब माल उड़ाते हैं। अन्य देशों में ऐसे मोटे ताज़े लोग भीख नहीं माँग सकते; वे फ़ौरन क़ैदखाने में भेज दिये जाते हैं। इन के सुधारने का तरीका यह है कि इन्हें दान न दिया जाय। सरकार इन्हें भीख माँगने से रोके। विद्वान साधु सन्यासी इन्हें अच्छा उपदेश दें, ताकि वे दुष्ट कर्मों को छोड़ें।

प्रश्न—आज कल दान देने की क्या व्यवस्था है ?

उत्तर—आज कल दान देने की कोई व्यवस्था नहीं है। परोपकार के भाव से देने वाले तो बहुत कम हैं। कोई स्वर्ग की प्राप्ति के लिए, कोई पाप की निवृत्ति के लिए और बहुधा लोग नाम के लिए दान देते हैं। हाकिमों को प्रसन्न करने और सर्वसाधारण की प्रशंसा लेने के लिए अब बहुत से रईस और अमीर चन्दे देने लगे हैं। साल में करोड़ों रुपये हिन्दू देते हैं परन्तु देश को इस से कोई लाभ नहीं होता।

प्रश्न—दान का क्या नियम होना चाहिये ?

उत्तर—देश, काल, आवश्यकता और पात्र कुपात्र का विचार कर के दान देना चाहिये।

प्रश्न—दान किसे देना चाहिये ?

उत्तर—दम्भी, दुराचारी, आलसी और लोभी को दान देना बुरा है। वर्तमान समय में व्यक्तियों की जगह संस्थाओं को दान देना चाहिये। अनाथालय, स्कूल, कालिज, औषधालय, कन्या-विद्यालय, विधवा आश्रम, उपयोगी सभायें, पुस्तकालय आदि संस्थाएँ दान के पात्र हैं। ग़रीब विद्यार्थियों, विधवाओं, वृद्ध पुरुषों,

परोपकारी विद्वानों की आवश्यकतानुसार सहायता करना भी अच्छा है।

प्रश्न—द्रव्य-दान के सिवा और दान भी है?

उत्तर—विद्या-दान, अभय-दान, क्षमा-दान, दया-दान, धैर्य्य-दान का बड़ा माहात्म्य है।

प्रश्न—नशेबाज़ी से क्या हानि है और कौन से नशे त्याज्य हैं?

उत्तर—शराब, गाँजा, अफीम, धतूरा, भाँग, तमाखू खाना, तमाखू पीना, आदि सब नशे त्याज्य हैं। नशेबाज़ी देश को बरबाद कर रही है। इन नशों के कारण हज़ारों आदमियों को दमा, खाँसी, तपेदिक और बदहज़मी आदि रोग हो जाते हैं। तमाखू पीना या खाना बड़ी बुरी आदत है। मुँह से दुर्गन्धि आती है और धुएँ के पास बैठने वालों को तकलीफ़ होती है। तमाखू खाकर जगह जगह पर थूकना बदतमीज़ी की निशानी है। शराब से धन का नाश, काया का क्षय और अपमान होता है। नशे का प्रभाव सन्तान पर बहुत बुरा पड़ता है। नशेबाज़ों की सन्तान रोगी, निर्बल और आलसी होती है।

नश से बुद्धि नष्ट होती है और इस लिए योग्य अयोग्य, उचित अनुचित, कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान नहीं रहता।

प्रश्न—तीर्थों की क्या दशा है ?

उत्तर—प्राचीन समय में तीर्थ विद्या और सत्सङ्ग के स्थान थे। इन की प्रसिद्धि किसी विशेष घटना या विशेष पुरुष के कारण हुई होगी। परन्तु आजकल इन में दुराचार, ठगी, लूट-मार और रोगों के सिवा औरधार्मिक कोई विशेषता नहीं रही। लाखों सीधे साधे लोग वहाँ जाकर अनेक प्रकार के कष्ट उठाते हैं और देश का करोड़ों रुपये रेलवे कम्पनियों के पास चला जाता है।

प्रश्न—क्या तीर्थों में विलकुल न जाना चाहिये ?

उत्तर—मुक्ति पाने या पाप छुड़ाने के हेतु से तीर्थयात्रा करना तो भ्रम है। हाँ, अगर किसी को प्राचीन मन्दिरों, स्थानों और दृश्यों के देखने की इच्छा हो तो अवश्य जाना चाहिये।

प्रश्न—आज कल स्त्रियों पर क्या अत्याचार होते हैं ?

उत्तर—स्त्रियों पर अनेकों अत्याचार हो रहे हैं। उन को दूर करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इस का विशेष वर्णन दूसरी जगह देखो।

प्रश्न—त्योहारों की क्या दशा है और इन का सुधार किस तरह हो सकता है?

उत्तर—त्योहार जाति में मेल और उत्साह बढ़ाने का एक अच्छा साधन हैं। त्योहार किसी घटना, किसी पुरुष या किसी बड़े कार्य्य के स्मारक हैं। इन से पुरानी बातों की याद आ जाती है, जिन से हम कई अच्छी शिक्षाएँ सीख सकते हैं। परन्तु आज कल के त्योहार तो हिन्दू जाति के गिरावट के प्रमाण हैं। त्योहारों के अवसर पर खेल-कूद, हँसी-खुशी, उत्सव-आनन्द का होना बुरा नहीं, परन्तु ये बातें सदाचार को बिगाड़ने वाली, जाति को बदनाम करने वाली और एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने वाली न हों। अब हमें ऐसे त्योहारों की नींव डालनी चाहिये और उन्हें इस तरह मनाना चाहिये जिस से देश में आशा, उत्साह, साहस, ज्ञान सच्चरित्रता और देश-भक्ति का प्रचार हो।

प्रश्न—चरित्र-सुधार से आप का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—व्यक्तियों से मिल कर समाज बनी है। समाज का सुधार सर्वसाधारण का सुधार है। जिस समाज के लोगों का भीतरी और बाहरी चरित्र शुद्ध नहीं वह समाज ही नहीं सुधर सकती। समाज के सुधार के लिए यह परमावश्यक है कि हम सब में सच्चाई, ईमानदारी, प्रतिज्ञा-पालन, साहस, न्याय, पवित्रता पुरुषार्थ आत्मावलम्बन आदि गुणों का व्यवहार हो। इन के बिना किसी काम में सफलता नहीं हो सकती। ये सब बातें समाज सुधार की जान हैं।

प्रश्न—समाज सुधार के काम में क्या रुकावट है ?

उत्तर—( १ ) सर्वसाधारण को हिन्दू समाज की अधोगति का ज्ञान नहीं, [२] जो समाज सुधार की आवश्यकता को समझते हैं वे मानसिक निर्बलता के कारण अपने विश्वास के अनुसार नहीं चलते; मानते कुछ और कहते कुछ और हैं परन्तु करते कुछ और हैं, [ ३ ] वर्तमान जातीय आवश्यकताओं और भविष्य पर कम ध्यान

दिया जाता है, परन्तु सुधार सम्बन्धी पुस्तकीय प्रमाणों और भूतकाल की घटनाओं की खोज और पड़ताल में बहुत समय नष्ट किया जाता है।

## १०—स्त्रियों के कर्तव्य और अधिकार।

प्रश्न—स्त्रियों के क्या कर्तव्य हैं?

उत्तर—स्त्री और पुरुष के अधिकार कर्तव्य तो समान हैं। परोपकार, देश-भक्ति, सद् व्यवहार कुटुम्ब-पालन आदि तो दोनों के लिए हैं परन्तु स्त्रियों के लिए कुछ विशेष भी हैं।

प्रश्न—हिन्दू गृहणियों के मुख्य २ कौन कर्तव्य हैं?

उत्तर—घर की और घर के पदार्थों की सफ़ाई करना या कराना, बालकों की तन्दुरुस्ती, भोजन, औषधि और शिक्षा का प्रबन्ध करना, घर के माल असबाब की चौकसी रखना और उसे किफ़ायत से खर्च करना, खर्च का हिसाब रखना, घर के चाकरों से काम लेना, भाई, बाप, देवर, जेठ आदि के साथ नम्रता और सुशीलता से बरताव करना, पति की उचित और उत्तम आज्ञाओं का पालन करना, स्त्री जाति के सुधार

के कामों में भाग लेना, अतिथियों का आदर-सत्कार करना इत्यादि स्त्रियों के कर्तव्य हैं।

प्रश्न—कौन से गुण स्त्री को सुशीला बनाते हैं?

उत्तर—पातिव्रत, सरलता, नियम पालन, लज्जा, आज्ञा-पालन, प्रेम, सहनशीलता, आत्म-प्रतिष्ठा और आस्तिकता स्त्री के सर्वोत्तम आभूषण हैं।

प्रश्न—इन गुणों को संक्षेप रूप से समझाओ।

उत्तर—पातिव्रतः—यह गुण स्त्री जाति का जीवन-प्राण है। इस गुण की आवश्यकता और महत्व इसी से प्रगट है कि इस के न रहने से पति-पत्नी सम्बन्ध वास्तव में नहीं रहता। स्त्री के इस गुण पर ही मनुष्य समाज की पवित्रता निर्भर है। श्रीसीता जी से बढ़ कर पातिव्रत धर्म का उदाहरण मिलना बहुत कठिन है। उन्होंने वनवास की अवस्था में महा भयङ्कर दुःखों और आपत्तियों के आने पर भी अपने धर्म का पालन किया। रावण के राज पाट, सुख सम्पत्ति और भोग विलास को सदा घृणा की दृष्टि से देखा। वे अपने प्राण तक देने को तैयार हुईं परन्तु पर पुरुष का ध्यान कभी स्वप्न में भी नहीं आया। पतिव्रता स्त्रियाँ देश का गौरव,

समाज का आभूषण और धर्म का स्तम्भ हैं। धन्य है वह देश जहाँ पतिव्रता नारियाँ निवास करती हैं, और भाग्यवान है वह पुरुष जिस की स्त्री पतिव्रता है।

सरलता:— आहार, व्यवहार, वस्त्र, आभूषण आदि में दिखावे का न होना सरलता है। इसी को सादगी कहते हैं। यह गुण स्त्री के तन, धन और धर्म तीनों का रक्षक है। जो स्त्रियाँ सरलता को धारण नहीं करतीं, वे अपने माता, पिता, सास, श्वसुर, पति, जेठ के लिए दुखदायक होती हैं, और दूसरी स्त्रियों के वस्त्र आभूषण को देख कर वे डाह करती हैं। स्त्रियों को चाहिए कि वे हमेशा निम्नलिखित बातों पर ध्यान रक्खें।

(१) कपड़ों और गहनों की बाहरी चमक दमक से चित्त की छुटाई ज़ाहर होती है।

(२) चालढाल पहनावा ऐसा होना चाहिये जो लोगों के ध्यान को न खींचे।

(३) मनुष्य की असली छुटाई बड़ाई बाहरी चीज़ों पर नहीं है। विद्या, नम्रता, सत्यशीलता मनुष्य वास्तव में बड़ा करता है।

(४) मुलम्मे के या माँगे हुए गहनों का पहेनना धोखा है। ऐसा करने से वृथा अभिमान बढ़ताहै।

५) सुन्दरता दिखाने के लिए शरीर के किसी अंग को नग्न रखना या महीन वस्त्र पहेनना बहुत बुरा है।

समपालनः–हमारे देश में शिक्षा न होनेके कारण पुरुष भी नियम से काम नहीं करते और दिन भर तरह २ की शिकायतें किया करते हैं। कभी नौकर को गाली देते हैं, कभी घरवालों से लड़ते हैं और कभी अपनी तक़दीर को दोष देते हैं। इस तरह इनका जन्म रोते ही रोते बीतता है। संसार में बहुत से आसान काम भी मुश्किल हो जाते हैं, अगर उन्हें नियम और बुद्धि से न किया जाय। स्त्रियों को घर के कामों से बहुत कम फुरसत मिलती है और इस सबब से वे हमेशा परेशान रहती हैं। अगर वे अपने कामों को समय और ज़रूरत को देख कर करें तो बहुत सी दिक्कतें दूर हो सकती हैं। किसी खास कायदे और क्रम के साथ काम करने से न तो जी उकताता है और न समय खराब होता है। एक साथ बहुत काम करने से देह थक जाती है, और दूसरे